डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी का आयोजन

अखिल भारतीय युवा संताली लेखक उत्सव

उद्घाटन, विमर्श और कविता–कहानी पाठ का आयोजन

नई दिल्ली, 30 जुलाई 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में अखिल भारतीय युवा संताली लेखक उत्सव का आज उद्घाटन असम से पधारे प्रख्यात संताली साहित्यकार और राजनीतिज्ञ श्री पृथिवी माझी ने किया। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे संताली भाषा एवं लिपि में केवल साहित्य–सर्जना पर ध्यान न देकर अन्य विषय–क्षेत्रों में भी लेखन पर ध्यान दें। उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा का माध्यम बनाए जाने पर भाषा का समुचित विकास संभव है। आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि इस उत्सव में भाग लेने के लिए असम, बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, गुजरात और दिल्ली के लगभग चालीस युवा लेखक पधारे हैं। उन्होंने कहा कि एक अनुमान के मुताबिक संताली भाषा में लेखकों की संख्या लगभग एक हजार है, जो गर्व की बात है। उन्होंने भाषा, संस्कृति एवं साहित्य के प्रति संताली समाज के उत्कट प्रेम और समर्पण की सराहना की।

अपने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने कहा कि युवा लेखकों से समाज को बहुत उम्मीदें हैं, क्योंकि संताली के अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों ने अपनी युवावस्था में ही अपना श्रेष्ठ लेखन किया है। उन्होंने आह्वान किया कि संताल युवा साहित्य लेखन के अलावा अनुवाद के क्षेत्र में भी कदम रखें, ताकि संताली भाषा के श्रेष्ठ साहित्य से अन्य भाषाभाषी समाज परिचित हो सके। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री चैतन्य प्रसाद माझी ने कहा कि साहित्य लेखन का आरंभ प्रायः कविता से होता है, लेकिन उनकी युवा लेखकों से अपील है कि वे कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, संस्मरण आदि काव्येतर विधाओं में लेखन के लिए प्रवृत्त हों।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित संताली कवयित्री, अनुवादक एवं आलोचक प्रोफेसर दमयंती बेसरा ने कहा कि अच्छा लिखने के लिए हमें अन्य भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य से भी परिचित होने की जरूरत है। उन्होंने संक्षेप में संताली साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करते हुए युवाओ से अपील की कि वे श्रेष्ठ लेखन करते हुए इस परंपरा को और आगे बढ़ाएँ।

क्रमशः...पृष्ठ : 2

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

सत्र का संचालन करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए बड़ी संख्या में पधारे गैर–संतालीभाषी श्रोताओं को इस बात के प्रति आभार प्रकट किया कि वे संताली के युवा लेखकों के उत्साहवर्धन के लिए यहाँ मौजूद हैं।

उत्सव का प्रथम सत्र 'युवा संताली लेखन : वर्तमान परिदृश्य' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री चंद्रमोहन किस्कू ने की। इस सत्र में डॉ. संजय कुमार हेंब्रम, डॉ. चेतन सोरेन और डॉ. रामू हेंब्रम ने क्रमशः कविता, कहानी और अन्य विधाओं में संताली साहित्य की रचना कर रहे युवा लेखन को संदर्भित करते हुए अपने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'कहानी–पाठ' का द्वितीय सत्र प्रो. नाकू हांसदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री लालचंद सोरेन, श्री बिरसांत हांसदा और सुश्री रानी मुर्मु ने अपनी कहानियों का पाठ किया। सुश्री रानी मुर्मु भूख को लेकर असहाय विपन्न परिवार पर आधारित अपनी कहानी 'रेंगेज' (गरीबी) का पाठ करते हुए भाव–विह्वल हो उठीं और उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े। बिरसात हांसदा ने अपनी कहानी का 'बारिया कहूँ कथा' (दो कौओं की कथा) का पाठ किया, जो किशोरों के लिए थी। श्री लालचंद सोरने ने 'तोनला त्रिय' (तोनल की बाँसुरी) तथा 'पेड़ा' (अतिथि) शीर्षक अपनी दो कहानियों का पाठ किया। पहली कहानी बालश्रमिक की संघर्ष–कथा थी तथा दूसरी एक प्रेमकथा। डॉ. हांसदा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पठित कहानियों का विश्लेषण करते हुए इन लेखकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

उत्सव का तृतीय सत्र कविता–पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता सुपरिचित संताली कवयित्री श्रीमती यशोदा मुर्मु ने की। सत्र में सर्वश्री मांगात मुर्मु, फागु बास्के, सुरेंद्रनाथ हेंब्रम, वीरेंद्र किस्कू, प्रेम सोरेन और श्रीमती ज्योत्स्ना सोरेन ने अपनी कविताएँ सुनाईं। पठित कविताओं में प्रकृति, प्रेम, आदिवासी संस्कृति, समाज की विसंगति, स्त्रियों की स्थिति, देशप्रेम आदि की सुंदर अभिव्यक्तियाँ थीं। कुछ कवियों ने अपनी कविताओं के हिंदी और अंग्रेजी अनुवादों का भी पाठ किया। श्रीमती यशोदा मुर्मु ने पठित कविताओं की सराहना करते हुए सभी युवा रचनाकारों के प्रति अपनी स्नेहाभिव्यक्ति की तथा अपनी एक कविता का पाठ हिंदी अनुवाद के साथ किया।

अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह के पहले दिन के सत्र संपन्न हुए। समारोह में बड़ी संख्या में संताली भाषी श्रोताओं के साथ–साथ अन्य भाषाओं के साहित्यप्रेमी भी उपस्थित थे।

ह/–

डॉ. के. श्रीनिवासराव